C-8

B.Ed - IInd YEAR

* सूचना से क्या तात्पर्य है? ज्ञान एवं सूचना में अंतर स्पष्ट करें।

Ans. सूचना एक प्रकार तथ्यपरक आँकड़ा या तथ्य है जो किसी भी माध्यम अर्थात पुस्तक, समाचार-पत्र, किसी व्यक्ति द्वारा, प्रत्यक्ष बोध द्वारा, या मीडिया द्वारा भी प्राप्त होती है। इस प्रकार यह ज्ञान का प्राथमिक स्तर है तथा व्यक्ति के बोध व चिन्तन में सहायक है। सूचना का संबंध स्मृति से जुड़ा होता है तथा यह ज्ञान के निर्माण के लिए आधार प्रदान करती है। अतः सूचना का संबंध प्रायः पूर्व ज्ञान से संबंधित होता है और यह पूर्व ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान का परिणाम होता है।

जैसे ⇒ यदि कहा जाय कि किसी विद्यालय मे 400 विद्यार्थी है तो यह सूचना है परन्तु इस सूचना को यदि ज्ञान में परिणित करना है तो इन सभी विद्यार्थियों के बारे में विस्तृत जानकारी अर्थात उनकी आयु, परिवेश, आर्थिक स्थिति, शिक्षा बुद्धिलब्धि आदि सभी को जान लेने के बाद ही यह कहा जा सकता है कि इस विद्यालय के 400 विद्यार्थियों का हमें ज्ञान है। अर्थात ज्ञान हेतु सूचना 'सेतु' का कार्य करती है। इसी प्रकार की पूर्व सूचनाएं ज्ञान प्राप्ति में सहायक होती है।

* ज्ञान व सूचना में अंतर ⇒

ज्ञान शब्द की कोई व्यापक परिभाषा देना कठिन है क्योंकि दर्शन की विभिन्न विचारधाराओं मे ज्ञान की अपने - अपने ढंग में व्याख्या की गई है। प्रज्ञा, ज्ञाता और ज्ञेय के पारस्परिक सम्बन्ध को ज्ञान माना जाता है। इससे यह तो स्पष्ट है कि प्रत्येक ज्ञान के साथ एक ज्ञाता ज्ञेय जुड़ा होता है और जब ज्ञाता का ज्ञेय के साथ

इन्द्रियों के माध्यम से सम्पर्क होता है तो ज्ञेय को पदार्थ के सम्बन्ध में एक चेतना होती है जिसे ज्ञान की संज्ञा दी जा सकती है। इसी प्रकार ज्ञानेन्द्रियों से जो प्रत्यक्षीकरण तथा अनुभव होता है, उसे भी ज्ञान कहते हैं। ज्ञान इन्द्रियों तक ही सीमित नहीं होता अपितु इन्द्रियों से परे भी जो अनुभूतियाँ होती हैं उसे भी ज्ञान कहा जाता है।

ज्ञान को समझने हेतु "ज्ञान के स्वरूप" पर प्रकाश डालना आवश्यक है। ज्ञान का स्वरूप किसी वस्तु के संबंध में जानकारी है जिसे सूचना भी कहा जा सकता है। जब हम किसी वस्तु के संबंध मे यह कहते हैं कि हमें उसकी जानकारी है तो हम यह मानकर चलते है कि यह जानकारी सत्य है। इसी प्रकार ज्ञान के अर्थ में तीन बातें आती है — सत्यता, सत्यता में विश्वास तथा सत्यता के लिये पर्याप्त प्रमाण आदि। प्रायः ज्ञान के स्वरूप को मानसिक तथा मनोवैज्ञानिक क्रिया, जैसे — जानना, करना और अनुभूति करना माना जाता है। यही तीन तत्व मनुष्य के व्यवहार में भी दृष्टिगत होते है तथा यह कहा जाता है कि अमुक व्यक्ति को इस कार्य का अच्छा ज्ञान है।

22/05/2020

लोक कला

जिस प्रकार मानव के विकास की कहानी अद्भुत और अनेक परिवर्तनों से युक्त है, उसी प्रकार कला के विकास के भी अनेक परिवर्तनों का स्पष्टतः अनुमान किया जा सकता है।

लोक-कला के अभ्युदय की तुलना यदि हम साहित्य के अभ्युदय के साथ करके देखें तो अधिक उपयुक्त होगा। हमारी प्राचीन वैदिक संस्कृति ने साहित्य की अभिवृद्धि के लिए एक साथ दो भाषाओं को जन्म दिया उनमें से एक थी संस्कृत और दूसरी थी लोक-भाषा। ~~मास्तीम~~ संस्कृत की भांति लोक बोलियां भी बड़े वेग से अनेक शाखा-प्रशाखाओं में पल्लवित होकर निरंतर आगे बढ़ती गई। यही स्थिति लोक-कला की भी रही उसने अपना विकास विभिन्न रूपों में किया उसका एक रूप परम्परागत विश्वासों, रहस्यात्मक और अतीत के संस्कारों पर आधारित था। उसका दूसरा रूप वह था जिसमें सामाजिक रीति-रिवाजों की प्रमुखता थी। इसके अतिरिक्त अपनी अनुभूतियों की स्वतन्त्र अभिव्यक्ति की ओर भी कलाकार का ध्यान था।

लोक-कला के विभिन्न रूप धूलि-चित्रों पर आधारित अपने विकास का इतिहास स्वयं ही बताते हैं। ये धूलि-चित्र पिसे चावलों अथवा रंग-बिरंगी मिट्टी से बनाए जाते हैं, जिनका प्रचलन मौर्य युग में ही हो चुका था। लोक-कला की प्राचीन परम्परा की उपलब्धि शुंग कालीन सांची के तोरणों में अंकित जातक कथाओं के लोकचित्रों में

होती है। सांची की कला को इतनी लोकप्रियता प्राप्त होने का यही कारण था कि उसमें लोक रुचियों का समावेश था। इस लोक-कला का प्रभाव अजन्ता के भित्ति-चित्रों में भी देखने को मिलता है।

त्योहारों तथा विवाह-शादी के समय मंगलमय चिन्हों को दीवारों तथा आंगनों पर अंकित करने का रिवाज बहुत पुराना है। आंगन तथा धरती पर अंकित किए जाने वाले चित्रों को चौका या रंगोली और दीवारों तथा द्वारों पर अंकित किए जाने वाले चित्रों को थापा कहते हैं। प्रत्येक त्योहारों तथा उत्सव के लिए भिन्न-भिन्न थापा अंकित किए जाने का प्रचलन है। इन परम्परागत लोक चित्रों के द्वारा हमें भारत की विभिन्न जातियों तथा जनपदों की संस्कृति एवं लोकाचारों के दर्शन होते हैं।

लोक-चित्रों में रंगों और रेखाओं की अपनी एक विशेषता होती है। चित्रों की पृष्ठभूमि के अनुसार रंगों का प्रयोग किया जाता है। इनमें हरे, पीले, नीले रंगों का प्रयोग अधिक होता है। मांडणा, रंगोली आदि में जो रंग इस्तेमाल किए जाते हैं वे प्रायः आटा, हल्दी और चावल तथा फूल-पत्तियों को पीसकर बनाए जाते हैं।

लोक-चित्रों के विषय का अपना महत्व है। अल्पना में प्राकृतिक सौन्दर्य झलकता है। इसमें फूल, पत्ते, पेड़-पौधे और बेलें तथा पशु-पक्षियों का चित्रण अधिक होता है। लोक-चित्रों में स्थानीय रुचियों का विशेष

ध्यान रखा जाता है। बहुत से चित्रों का विषय देवी-देवता, कथानक और पौराणिक कथाओं से सम्बद्ध होता है। प्रत्येक त्यौहार पर उस त्यौहार के देवता का अंकन अवश्य किया जाता है। देवताओं के चित्रण में बहुधा लक्ष्मी और गणेश प्रमुख होते हैं, जिनको स्वास्थ्य, समृद्धि और मंगल का सूचक माना जाता है। लोक-कला में चित्रकार अपने परिवेश को लेकर चलता है। इस संसार में पशु-पक्षी मनुष्य के साथी के रूप में स्वीकार किए गए हैं। इनका चित्रण मंगलकामना से किया जाता है। कृषि प्रधान समाज होने के कारण भारत में पशुओं का महत्व और भी अधिक है। लोक-कला में तोता, मैना, मुर्गा, हंस, कोमल, मोर, सारस, चकोर, हिरण घोड़ा और हाथी आदि पशु-पक्षियों का चित्रण अधिक किया गया है। सभी लोक-कलाओं में मंगलमय कलश, चक्र, शंख, स्वास्तिक तथा गहनों आदि का निर्माण किया जाता है। उनको सुख-समृद्धि का सूचक माना जाता है। ये वस्तुएं इस बात का प्रमाण हैं कि लोक-चित्रों का निर्माण भारतीय महिलाओं की रुचियों पर अधिक निर्भर करता है।

लोक-कला का यह मंगल स्वरूप अनादि काल से अविच्छिन्न रूप से चलता आया है। आज लोक-कला तथा ललित कलाओं से विभूषित अनेक वस्तुओं का निर्यात किया जाता है। जिससे करोड़ों रुपये की विदेशी मुद्रा अर्जित हो रही है।